साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 07
June 2017

"छत्तीसगढ़ के सामंती राज्यों में प्रजामण्डल की स्थापना: एक अध्ययन"

डा० दलजीत सिंह प्राध्यापक,
रा० व० मा० विद्यालय, जीन्द, (हरियाणा)

शोध-आलेख सार:- छत्तीसगढ़ में 14 सामंती राज्य थे। भारत के मध्यवर्ती भाग में सन् 1861 में मध्यप्रान्त नामक एक नये प्रान्त का निर्माण किया गया था। अधिकतर राज्यों में निरंकुश तथा स्वेच्छाचारी शासन का बोल बाला था। ब्रिटिश भारत में भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रसार और लोकतंत्र, नागरिक अधिकारों तथा उत्तरदायी शासन प्रणाली के प्रति बढ़ती राजनीतिक चेतना ने देशी राज्यों की जनता को भी प्रभावित किया। महात्मा गाँधी के द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व ग्रहण करने के बाद देशी राज्यों की जनता के आंदोलनों पर व्यापक प्रभाव पड़ा। इसी समय भारत के देशी राज्यों मे प्रजामण्डल गठित होने लगे। परिणाम स्वरूप विभिन्न राज्यों के प्रजामण्डल आपस में मिलने लगे तथा उन्होंने क्षेत्रिय राजनीतिक परिषदें या प्रजामण्डल या स्टेट कांग्रेस बना लिए। अधिकांश राज्यों में जन-जागृति सन् 1938-39 में प्रारंभिक स्थिति में थी। रायगढ़ और सारगढ़ राज्यों में यद्यपि स्टेट कांग्रेस की स्थापना सन् 1946 में हुई तथापि इन राज्यों में जनआंदोलन का सूत्रपात सन् 1920 के असहयोग आंदोलन के समय से ही हो चुका था।

मुख्य-शब्द:- सामन्त, प्रजामण्डल, देशी राज्य, स्टेट कांग्रेस, सनद

छत्तीसगढ़ में 14 सामंती राज्य थे। भौगोलिक संरचना और सभ्यता की दृष्टि से एक-दूसरे से भिन्न थे।[1] सन् 1741 में कतचुरी संत्ता के पतनोपरांत छत्तीसगढ़ में मराठों की सत्ता स्थापित हुई। मराठों ने छत्तीसगढ़ की जमींदारियों को यथावत् रहने दिया तथा अपने लाभार्थ कुछ नई जमींदारियाँ जैसे राजनांदगाँव, खुज्जो और छुईखदान बनाई। ये सन् 1818 से 1830 तक ब्रिटिश सरंक्षण में थी। इस समयावधि में जमींदारियों के साथ लिखित सम्बन्ध स्थापित किया गया।

साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 07
June 2017

सन् 1857 की क्रान्ति के समय अनेक देशी राज्यों व जमींदारियों ने तन - मन - धन से ब्रिटिश सरकार को सहयोग देकर क्रांति को असफल बना दिया था।[2] सन् 1858 में महारानी विक्टोरिया ने एक नवीन नीति की घोषणा की थी जिसके द्वारा देशी राज्यों तथा जमींदारियों को उनके अधिकार लौटा दिए गए एवं उन्हें सनदें प्रदान की गई।[3]

भारत के मध्यवर्ती भाग में सन् 1861 में मध्यप्रान्त नामक एक नये प्रान्त का निर्माण किया गया था। अंततः सन् 1862 में यह निर्णय लिया

गया था कि छत्तीसगढ़ की शक्तिशाली और अधिक आबादी वाली जमींदारियों को सामंती राज्य घोषित किया गया था।[4] उस समय छत्तीसगढ़ में चौदह राज्य थे जिसमें पाँच उड़िया भाषी थे तथा शेष नौ हिन्दी भाषी थे। जब सन् 1905 में बंगाल प्रांत का विभाजन और पुनर्गठन किया गया तब उड़िया भाषी 5 राज्यों को बंगाल में सम्मिलित कर दिया गया तथा छोटा नागपुर कमिश्नरी के पाँच राज्य जो हिन्दी भाषी थे वे छत्तीसगढ़ में जोड़ दिये गये।[5] इस प्रकार छत्तीसगढ़ अंचल में चौदह राज्य बनाये गये।

प्रजामंडलों की स्थापना

छत्तीसगढ़ के सभी छोटे-बड़े सामंती राज्य ब्रिटिश सरकार की प्रभुसत्ता को मानते थे। 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों तक ब्रिटिश सरकार और सामंती राज्यों के सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण बने रहे। अधिकतर राज्यों में निरंकुश तथा स्वेच्छाचारी शासन का बोल बाला था। ब्रिटिश भारत की तुलना में इन राज्यों में भूमिकर की दरें काफी अधिक थी।

ब्रिटिश भारत में भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रसार और लोकतंत्र, नागरिक अधिकारों तथा उत्तरदायी शासन प्रणाली के प्रति बढ़ती राजनीतिक चेतना ने देशी राज्यों की जनता को भी प्रभावित किया। बीसवीं सदी के प्रारंभ में जो बहुत से क्रांतिकारी ब्रिटिश भारत से भागकर देशी राज्यों में आ गये थे, उन्होनें वहां की जनता में राजनीतिक चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 07
June 2017

सन् 1857 के विद्रोह के बाद देश का नेतृत्व राजा और जागीरदारों के हाथों से निकलकर मध्यवर्ग के हाथों में आ गया था, जो राजनीतिक चेतना से प्रभावित थे। वहाँ के नवयुवक अन्य प्रांतो में जाकर वहाँ शिक्षा ग्रहण करते थे और इस प्रकार उन स्थानों पर हो रही राजनीतिक हलचल से परिचित हो रहे थे। साथ ही मध्यप्रान्त में ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, थियोसोफिकल सोसायटी, रामकृष्ण मिशन तथा कांग्रेस की स्टेडिंग कमेटी की शाखाएँ स्थापित हो गई थी और विधिवत् जन जागरण का कार्य प्रारंभ हो गया था।[6] चूँकि छत्तीसगढ़ भी मध्यप्रान्त का ही एक भाग था, अतः यहाँ भी राजनीतिक चेतना का आरंभ देश के अन्य भागों के साथ ही होने लगा था। यद्यपि ये संस्थाएँ छत्तीसगढ़ में देर से स्थापित हुई, फिर भी यहाँ स्थापित अन्य संस्थाएँ जैसे पीपुल्स-टीचर्स एसोसिएशन, कवि समाज और छत्तीसगढ़ बाल समाज ने युवकों में राष्ट्रीय चेतना का विकास किया।

महात्मा गाँधी के द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व ग्रहण करने के बाद देशी राज्यों की जनता के आंदोलनों पर व्यापक प्रभाव पड़ा। छत्तीसगढ़ के सामंती राज्यों की जनता ने सेवा समितियां, हितकारिणी सभायें, रात्रि विद्यालय, वाचनालय और चल पुस्तकालय स्थापित करके जन-जागरण प्रारंभ किया। रायगढ़ राज्य में सेवा समाज, यंग-मैन्स पुस्तकालय तथा साहित्यिक संस्था प्रेम मंदिर, सारगढ़ राज्य में नगर सुधार समिति, युवक संघ तथा महावीर वाचनालय, सक्ती राज्य में जन जागृति संघ, राजनांदगाँव राज्य में सरस्वती पुस्ताकलय, छुईखदान राज्य में सेवा समाज व सेवा दल, खैरागढ़ राज्य में सेवा समिति आदि संस्थाओं की स्थापना हुई।[7] ये संस्थायें राजनीतिक कार्यों की अपेक्षा सामाजिक कार्यों पर अधिक ध्यान देती थी, फिर भी सामंती प्रशासन ने इन पर प्रतिबंध लगाये हुए थे।

इसी समय भारत के देशी राज्यों मे प्रजामण्डल गठित होने

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 07
June 2017

लगे। बड़ौदा सबसे पहला राज्य था, जहां प्रजामण्डल बना। शीघ्र ही मैसूर, हैदराबाद, जामनगर, इंदौर, नवा नगर तथा कठियावाड़ और दक्खन के राज्यों में प्रजामंडलों का गठन हुआ। सन् 1920 से आरम्भ होने वाले दशक में देशी राज्यों की जनता एक ऐसे केन्द्रीय संगठन की आवश्यकता महसूस कर रही थी जो उनका प्रतिनिधित्व कर सके तथा नागरिक स्वतंत्रता एवं उत्तरदायित्व पूर्ण शासन के लिए उनके पक्ष का समर्थन कर सके। परिणाम स्वरूप विभिन्न राज्यों के प्रजामण्डल आपस में मिलने लगे तथा उन्होंने क्षेत्रिय राजनीतिक परिषदें या प्रजामण्डल या स्टेट कांग्रेस बना लिए। जब विभिन्न राज्यों से आये लोग आपस में मिलते और अपनी समस्याओं पर विचार करते थे और ये कामना करते थे कि उनका प्रतिनिधित्व करने के लिए वैसा ही एक अखिल भारतीय संगठन होना चाहिए जैसा कि एक ब्रिटिश भारत की जनता का प्रतिनिधित्व करने के लिए तथा उनके विचारों व इच्छाओं को व्यक्त करने के लिए कांग्रेस संगठन था। सन् 1927 में बम्बई में देशी राज्यों के नेताओं की एक विराट सभा हुई जिसका सभापतित्व दीवान बहादूर एम. रामचन्द्र राव ने किया। यहीं पर अखिल भारतीय राज्य प्रजा परिषद की स्थापना की गई और निश्चय किया गया था कि राज्यों की राजनीतिक संस्थाओं जैसे प्रजामण्डल, स्टेट कांग्रेस और लोक परिषद आदि को इससे सम्बद्ध कर दिया जाये।

इस प्रकार देशी राज्यों में राजनीतिक संगठनों की स्थापना में गति आने लगी थी। अखिल भारतीय राज्य प्रजा परिषद के गठन के बाद राज्यों की जनता में राजनीतिक जागृति बढ़ने लगी थी। इस समय तक अनेक

राज्यों में कांग्रेस के प्रभाव से प्रजामण्डलों का गठन होने लगा था। विभिन्न राज्यों के प्रजामण्डलों को अखिल भारतीय राज्य प्रजा परिषद से सम्बद्धता मिलने के फलस्वरूप किसी एक राज्य की समस्या केवल उसी राज्य तक सीमित नहीं रहती थी, अपितु उसे अखिल भारतीय समस्या समझा जाने लगा था।

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 07
June 2017

सन् 1937 के चुनावों में कांग्रेस और देशी राज्यों की जनता के सम्बन्धों के इतिहास में एक नया अध्याय आरंभ हुआ। इस समय से पहले स्थापित प्रजामण्डल अधिक सक्रिय हो गये तथा जिन राज्यों में प्रजामण्डलों की स्थापना नहीं हुई थी वहाँ शीघ्र ही उनकी स्थापना हो गई। छत्तीसगढ़ के सामंती राज्यों पर भी अखिल भारतीय राज्य प्रजा परिषद् की स्थापना व उसके अधिवेशनों का प्रभाव परिलक्षित होने लगा था। सन् 1939 में लुधियाना में अखिल भारतीय राज्य प्रजा परिषद् का वार्षिक अधिवेशन संपन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता पं. जवाहरलाल नेहरू ने की थी। इस अधिवेशन में एक संकल्प पारित हुआ, जिसके अनुसार केवल बड़े राज्यों की जनता को तत्कालीन ब्रिटिश भारतीय क्षेत्रों में स्वतंत्रता संग्राम की तरह अपने-अपने सीमा क्षेत्रों में संग्राम छेड़ने की सलाह दी गई थी। उड़ीसा एवं छत्तीसगढ़ के छोटे-बड़े सामंती राज्यों में प्रजामंडल एवं स्टेट कांग्रेस के नाम से प्रभावी राजनीतिक संगठन खड़े हुए और इन संगठनों के माध्यम से इन राज्यों की जनता ने अंग्रेजों तथा देशी राजाओं के दूहरे शासन से मुक्ति पाने के लिये संघर्ष छेड़ने का शंखनाद किया।[8]

अधिकांश राज्यों में जन-जागृति सन् 1938-39 में प्रारंभिक स्थिति में थी। कुछ ऐसे भी राज्य थे, जैसे चांगभखार, सरगुजा तथा कांकेर आदि जहाँ जन जागृति नहीं के बराबर थी। केवल कुछ राज्यों जैसे राजनांदगांव, छुईखदान, रायगढ़, सारगढ़, खैरागढ़ इत्यादि में राजनीतिक जागृति व जन आन्दोलन व्यापक था। इन राज्यों के आन्दोलन को क्षेत्रिय समाजवादी नेता ठाकुर प्यारेलाल सिंह, मगनलाल बागड़ी तथा पं. श्याम नारायण कश्मीरी का नेतृत्व, सहयोग एवं समर्थन प्राप्त हुआ था।

छत्तीसगढ़ के सामंती राज्यों में राजनांदगांव प्रारम्भ से जन आन्दोलन का प्रमुख केन्द्र था और ठाकुर प्यारेलाल सिंह एक लोकप्रिय नेता के रूप में उभर चुके थे।[9]

ठाकुर प्यारेलाल सिंह की प्रेरणा एवं प्रयासों से जिस प्रकार सन् 1938 में राजनांदगांव स्टेट

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 07
June 2017

कांग्रेस की स्थापना हुई। यद्यपि छुईखदान में सन् 1938

में ही स्टेट कांग्रेस की स्थापना हुई[10], परंतु खैरागढ़ राज्य में सन् 1946 में इसकी स्थापना की गई।[11] यद्यपि खैरागढ़ राज्य में देरी से स्टेट कांग्रेस की स्थापना हुई, परंतु यहां जन आंदोलन सन् 1938 से ही प्रारंभ हो चुका था।

बंशषीधर त्रिपाठी एवं तीरथराम थवाईत की प्रेरणा से सन् 1930-1931 में रायगढ़ के एक कच्चे मकान में खादी भंडार की स्थापना हुई जो राजनीतिक चर्चाओं एवं गोष्ठियों का केन्द्र बन गया था। स्वतंत्रता आंदोलन से प्ररित होकर जन-जागृति के उद्देश्य से कुछ युवकों ने जिनमें फजले हुसैन, अब्दुल सत्तार, महफुज खान आदि ने रायगढ़ के मंदिर चौक में यंग मैन्स लाईब्रेरी नामक एक पुस्तकालय की स्थापना की थी।[12]

राष्ट्रीय चेतना को अधिक व्यापक रूप से एवं सामान्य जनता तक पहुंचाने के लिए कुछ नव-युवकों ने सन् 1936 में एक साहित्यिक संस्था ने गुप्त रूप से राष्ट्रीयता का प्रचार-प्रसार किया। इस तरह अखिल भारतीय देशी राज्य परिषद के साथ रायगढ़ स्टेट कांग्रेस सम्बद्ध हो गई।[13]

सारगढ़ राज्य में सन् 1942 के आस-पास राजनीतिक चेतना प्रज्जवलित करने की दृष्टि से प्रजामण्डल नामक एक संस्था स्थापित की गई। बाद में यह संस्था स्टेट कांग्रेस में विलीन हो गई।[14]

रायगढ़ और सारगढ़ राज्यों में यद्यपि स्टेट कांग्रेस की स्थापना सन् 1946 में हुई तथापि इन राज्यों में जनआंदोलन का सूत्रपात सन् 1920 के असहयोग आंदोलन के समय से ही हो चुका था। रायगढ़ नगर चूंकि मुंबई-हांवड़ा रेलमार्ग का मुख्य स्टेशन था, जहां से अनेक राष्ट्रीय स्तर के नेता प्रवास करते थे। उनके स्वागत में रायगढ़ स्टेशन पर इकट्ठा होने वाले जनसमूह में राजनीतिक चेतना का प्रसार होना आवश्यक था। निःसंदेह छत्तीसगढ़ के सामंती राज्यों में रायगढ़ राज्य जनचेतना के संबंध में अग्रणी राज्यों में से एक था।

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 07
June 2017

बिहार में भारत छोड़ो आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के बाद चन्द्रिकेशदत्त शर्मा जशपुर राज्य मे आये और पहली बार वहां कांग्रेस समिति का गठन किया। पं. किशोरी मोहन त्रिपाठी रायगढ़ से सलाह मशविरा पश्चात् प्रजा संघ संस्था की स्थापना की गई जो बाद में जशपुर स्टेट कांग्रेस के रूप में परिवर्तित हो गई।[15] इसी प्रकार सन् 1946-47 में सरगुजा राज्य में स्टेट कांग्रेस की स्थापना हुई। समर बहादुर सिंह देव, राम पाल सिंह, कपिल देव, कुंज बिहारी लाल गुप्ता, नारायण सिंह और राम जी लाल अग्रवाल इसके सक्रिय कार्यकर्ता व सदस्य थे।[16] ठाकुर प्यारेलाल सिंह के प्रोत्साहन व प्रयासो से उदयपुर राज्य में भी अन्य राज्यों की भांति स्टेट कांग्रेस का गठन किया गया।[17] कोरिया राज्य के शासक रामानुज प्रताप सिंह देव एक सुधार वादी तथा प्रगतिशील व्यक्ति थे। उन्होनें बैकुण्ठपुर और मनेन्द्रगढ़ में नगर पालिका निर्माण करने तथा सभा व प्रजा परिषद कायम करने की महत्वपूर्ण घोषणा की थी।[18]

सरगुजा समूह के सामंती राज्यों जशपुर, सरगुजा, उदयपुर, तथा कोरिया में सन् 1946-47 में स्टेट कांग्रेस तथा प्रजा परिषद की स्थापना के परिणामस्वरूप छत्तीसगढ़ के इस क्षेत्र में उत्तरदायी शासन के लिए जनआंदोलन गतिशील हो गया। सामंती राज्यों के किसी शासक द्वारा किया गया यह कार्य निश्चित ही अनुकरणीय था।

ठाकुर प्यारेलाल सिंह सन् 1946 में बस्तर राज्य की राजधानी जगदलपुर में पहुँचे थे और इस अवसर पर पी.सी. नायडू के निवास स्थान पर उन्होंने बस्तर स्टेट कांग्रेस की स्थापना की थी। जनसभा में प्यारेलाल ने निडर होकर न्याय और सत्य की राह पर चलने का संदेश दिया था। कांकेर में ठाकुर प्यारेलाल सिंह ने 10 दिसंबर,1946 को स्टेट कांग्रेस की स्थापना की थी।

कवर्धा राज्य मे गनपत सिंह चन्द्रवंशी ने जन जागरण लाने के लिए स्वराज्य प्राप्ति समिति नामक एक संस्था की सन् 1922 में स्थापना की। जब राजा धर्मराज सिंह को गद्दी प्राप्त हुई तो

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 07
June 2017

उन्होनें प्रजा के साथ मधुर संबंध स्थापित करने की दृष्टि से सन् 1945 में कवर्धा स्टेट कौंसिल स्थापित करने की घोषणा की थी।[19] इसमें प्रायः हर वर्ग को प्रतिनिधित्व दिया गया था। राज्य के जागरूक व पढ़े-लिखे लोगों ने इस कौंसिल के समकक्ष संस्था स्थापित करने का प्रयास किया। परिणामतः सन् 1945-46 में कवर्धा में प्रजामण्डल संस्था की स्थापना हुई।[20]

उपसंहार:- उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि छत्तीसगढ़ के अधिकांश सामंती राज्यों मे स्टेट कांग्रेस के रूप में प्रजामण्डल का गठन हुआ। जहां एक ओर राजनांदगांव, रायगढ़ तथा कवर्धा राज्यों में सन् 1920 के दशक से ही राजनीतिक चेतना दृष्टिगोचर हो रही थी। जो भी हो, धीरे-धीरे सन् 1920 से लेकर सन् 1946-47 तक छत्तीसगढ़ के सामंती राज्यों में प्रजामण्डल स्थापित हो चुके थे, जिनका संबंध अखिल भारतीय राज्य प्रजा परिषद से था। ये संगठन अपने-अपने क्षेत्रों की जनता को उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिए प्रेरित करते थे। इनके प्रभाव से ही छत्तीसगढ़ में निरंकुश राजतंत्र की सत्ता समाप्त होने लगी थी।

संदर्भ:-

1. ने. डवल्पू चिशम - रिर्पोट ऑफ दी लैण्ड रेवेन्यू सेटलमेन्ट ऑफ द बिलासपूर डिस्ट्रिक्ट इन द सेन्ट्रल प्रॉविन्सेज, पृ. 64 व पृ. 99. नागपुर, 1868

2. आर. टेम्पल - रिर्पोट आन द जर्मीदारी एण्ड पेटी चीफटेन्स ऑफ सी. पी. पृ. 43. नागपुर, 1863

3. महारानी विक्टोरिया की सन् 1958 की घोषणा।

4. आर एच. केडाक - ए नोट आन द स्टेट्स ऑफ द जर्मीदार्स ऑफ द सी. पी. पृ. 4. नागपुर, 1883

5. बंगभग - 1905

6. प्रयाग दत्त शुक्ल - क्रांति के चरण, पृ. 32, माधवराव सप्रे संग्रहालय भोपाल, 1939

7. मध्यप्रदेश संदेश स्वाधीनता आंदोलन विशेषांक, वर्ष 13, अंक - 3 जन संर्पक संचनालय, भोपाल 15 अगस्त, 1987, पृ.144-150

8. मध्यप्रदेश संदेश - पूर्वोक्त, पृ. 146

9. जे.पी. शर्मा - मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय आन्दोलन, पृ. 139. दिल्ली, 1989

ISSN- 2454-2695

Volume 03 Issue 07

June 2017

10. ठाकुर प्यारेलाल सिंह के पत्रों के संग्रह से, 05.02.1946 अप्रकाशित उनके पौत्र आशीष ठाकुर रायपुर के पास उपलब्ध। ठा. प्यारेलाल सिंह राजनांद गांव जमींदारी में वकील नागपुर में बगांल कॉटन मिल की हड़ताल में अग्रणी, 1920, 1934 और 1946 के आन्दोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका – सहकारिता आन्दोलन में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया।

11. अग्रदूत (साप्ताहिक), सम्पादक - केशव प्रसाद वर्मा, रायपुर अंक 30 जून 1946, पृ. 8

12. मध्यप्रदेश संदेश - पूर्वोक्त, पृ. 148

13. मध्यप्रदेश संदेश - पूर्वोक्त, पृ. 152

14. रमेन्द्रनाथ मिश्र एवं लक्ष्मीधर झा - छत्तीसगढ़ का राजनीतिक एवं सामाजिक इतिहास, पृ. 161. सेन्ट्रल बुक हाउस, रायपुर 1998

15. मध्यप्रदेश संदेश - पूर्वोक्त, पृ. 154

16. समर बहादुर सिंह देव - सरगुजा एक अध्ययन, पृ. 60-61. संवत् 2012

17. अग्रदूत - 29 फरवरी, 1948 पृ. 3

18. काउन रिप्रजेटेटिव रिकार्ड माईक्रो फिल्म ACC NO. 365, राष्ट्रीय अधिलेखागार मे उपलब्ध।

19. अग्रदूत - 6 मई 1945 पृ. 6

20. कवर्धा दर्पण - सम्पादक - गिरधर शर्मा, कवर्धा, 1939, पृ. 28